15

कुरज री विनती

समंदर के किनारे एक ऊँचा पर्वत था। उस पर्वत की तलहटी में सुथरी ठौड़ देखकर एक कुरज ब्याई। सत्रह अंडे लाई। उन अंडों को कुरज ने सत्रह दिन तक सेया। उस कुरज ने सत्रह दिन तक एक दाना भी चुग्गा नहीं लिया। सेते–सेते उन सत्रह अंडों से सत्रह बच्चे निकले। तब वह अपने बच्चों के लिए चुग्गे की खोज में उड़ी। उड़ते–उड़ते उसे एक तोते की पाँख जैसा हरा–भरा ज्वार का खेत नज़र आया। वह रोज़ाना उस खेत से अपने बच्चों के लिए चुग्गा ले जाने लगी। खेत का मालिक लोभी था। उसने सोचा कि यह कुरज तो हमेशा बिगाड़ करती है, इसे पकड़ना चाहिए। एक दिन उसने ज्वार के पौधे–पौधे पर गुड़ की पात का लेप कर दिया। कुरज चुग्गे के लिए खेत में उतरी तो चिपक गई। कुरज उड़ने के लिए छटपटाने लगी तो किसान ने आकर उसे पकड़ लिया। उसे खेजड़ी पर बाँध दिया। कुछ समय के बाद भेड़ चराने वाला गड़रिया उधर से निकला। फड़फड़ाहट करती हुई कुरज ने करुण स्वर में गडरिये से विनती की –

रेवड़ रा एवाळिया रे बीर – टमरकटूँ
बाँधी कुरज छुड़ाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
समदाँ रै काँठै ब्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ
भाखर खुड़कै ब्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ
सतरै बिचिया ल्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ
आँधी में उड़ जाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
लूआँ में बळ जाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
मेहाँ में गळ जाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
भूखाँ ईं मर जाई म्हारा बीर – टमरकटूँ

(निर्देशः– लोकगीत को गाएँ और बच्चों से गवाएँ। स्थानीय लोकगीत संकलित करवाएँ। बालसभा में लोकगीत की प्रस्तुति कराएँ।)

कुरज की विनती सुनकर गडरिये को दया आ गई। उसने खेत के मालिक से कहा–''छाँटकर अच्छी–सी एक भेड़ ले ले और इस निरीह कुरज को छोड़ दे।'' खेत का मालिक लोभी था। उसने कहा – ''सारा का सारा रेवड़ दे, तो छोडूँ।'' गडरिये ने कहा ''मैं तो नौकर हूँ। लेनी हो तो एक भेड़ ले ले। इससे अधिक देना मेरे हाथ की बात नहीं।'' उसने काफी निहोरे किए, पर खेत का मालिक नहीं माना। कुछ देर बाद गायों का एक बड़ा झुंड आया। कुरज ने वैसे ही करुण स्वर में विनती की–

गायाँ रा गवाळिया रे बीर – टमरकटूँ
बाँधी कुरज छुड़ाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
समदाँ रै काँठै ब्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ

कुरज की विनती सुनकर ग्वाले को दया आ गई। उसने खेत के मालिक से कहा– ''छाँटकर एक अच्छी–सी गाय ले ले और इस कुरज को छोड़ दे।'' पर खेत का मालिक अत्यन्त लोभी था। उसने कहा–''सारी की सारी गायें दे, तो छोडूँ।'' ग्वाले ने कहा – ''मैं तो नौकर हूँ। इससे अधिक देना मेरे हाथ की बात नहीं। लेनी हो तो एक बढ़िया गाय ले ले।'' काफी समय तक निहोरे किए, तब भी वह नहीं माना। फिर कुछ देर बाद भैंसों का झुंड आया। कुरज ने करुण स्वर में विनती की

भैंसों रा गवाळिया रे बीर – टमरकटूँ
बाँधी कुरज छुड़ाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
समदाँ रै काँठै ब्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ

कुरज की यह विनती सुनकर भैंसों के ग्वाले के हृदय में दया उमड़ पड़ी। उसने खेत के मालिक से कहा – ''छाँटकर बढ़िया–सी एक भैंस ले ले और इस बँधी कुरज को छोड़ दे।'' पर खेत का मालिक बड़ा लालची था।

उसने कहा – ''सारी की सारी भैंस दे तो इसे छोडूँ।'' तब ग्वाले ने कहा – ''मैं तो एक मामूली नौकर हूँ। इससे अधिक देना मेरे हाथ की बात नहीं। लेनी हो तो एक उम्दा भैंस ले ले।'' बहुत देर तक निहोरे किए, पर वह नहीं माना सो नहीं माना। कुछ समय बाद ऊँटों का झुंड उधर से गुजरा। कुरज ने हृदय चीर देने वाले स्वर में विनती की –

सांड्याँ रा रेवाळिया रे बीर – टमरकटूँ
बाँधी कुरज छुड़ाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
समदाँ रै काँठै ब्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ

कुरज की यह विनती सुनकर गडरिये को काफी दया आई। उसने खेत के मालिक से कहा–''छाँटकर एक अच्छा–सा ऊँट ले ले और इस बँधी कुरज को छोड़ दे।'' पर खेत का मालिक बहुत लोभी था। उसने कहा– ''सारे का सारा झुंड दे, तो छोडूँ।'' तब गडरिये ने कहा– ''मैं तो एक मामूली नौकर हूँ। इससे अधिक देना मेरे हाथ की बात नहीं। लेना हो तो एक बढ़िया ऊँट ले ले।'' बहुत निहोरे किए, तब भी वह नहीं माना, सो नहीं माना। कुछ देर बाद सामने के बिल से एक ऊंदरा निकला। विवश कुरज ने छटपटाते हुए उससे भी करुण स्वर में विनती की –

पँयाळ देस रा राजा रे बीर – टमरकटूँ
बाँधी कुरज छुड़ाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
समदाँ रै काँठै ब्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ
भाखर खुड़कै ब्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ
सतरै बिचिया ल्याई म्हारा बीर – टमरकटूँ
आँधी में उड़ जाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
लूआँ में बळ जाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
मेहाँ में गळ जाई म्हारा बीर – टमरकटूँ
भूखाँ ईं मर जाई म्हारा बीर – टमरकटूँ

कुरज की यह विनती सुनकर ऊंदरे का हृदय फट–सा पड़ा। उसकी आँखों में आँसू छलछला आए। खेत के मालिक पर उसे बहुत क्रोध आया। फिर भी उसने संयत स्वर में कहा – ''यदि तू इस कुरज को छोड़ दे तो तुझे मैं सोने की एक माला दूँगा। पूरे एक सौ आठ मनकों की।'' सोने के दमकते पीले रंग से खेत के मालिक की आँखें चौंधिया–सी गईं। बोला–''मैंने किसी की बात नहीं मानी, अड़ा रहा। पर तेरा कहना तो मानना ही पड़ेगा! किंतु केवल सोने की माला से काम नहीं सरने वाला। सोने का एक बाजोटा व सोने का एक वजनी मुकुट भी दे तो इस कुरज को छोड़ दूँ। इसने मेरे खेत में कितना बिगाड़ा किया, तुम इसका अंदाज नहीं लगा सकते! ''

ऊंदरे ने कहा– ''तू कहे तो ये तीनों चीज़ें देने में मुझे कोई एतराज नहीं। मेरे कुछ भी घाटा नहीं पड़ेगा। पर कुरज को पहले छोड़, मुझे तेरा विश्वास नहीं।'' खेत के मालिक ने ज्यादा हठ किया तो ऊंदरे ने बिल के पास वे तीनों चीज़ें लाकर रख दीं। खेत का मालिक खुशी में बावला–सा हो गया। उसने उसी पल कुरज को छोड़ दिया। कुरज तो छूटते ही ऊपर आकाश में उड़ गई। खेत का मालिक सोने की तीनों चीजों को लेने के लिए उधर लपका ही था कि होशियार ऊंदरा उन तीनों चीज़ों को लेकर बिल में घुस गया। पैरों से बिल के बाहर धूल उछालते हुए कहने लगा–''सोने के बदले धूल ले, सोने के बदले धूल ले।'' खेत का मालिक मुँह उतारकर आकाश में उड़ती हुई कुरज को एकटक देखता रहा। अब क्या उपाय हो सकता था। कुरज तो आकाश में उड़कर अदृश्य हो गई और ऊंदरा पाताल में अदृश्य हो गया।

विजयदान देथा

कुरज साइबेरियाई पक्षी है। ये वर्षाऋतु में राजस्थान में आते हैं। ये पश्चिमी राजस्थान एवं भरतपुर के घना

अभयारण्य में रहते हैं। शीतकाल में ये फिर साइबेरिया चले जाते हैं। इन्हें सारस भी कहा जाता है। इस पक्षी पर राजस्थानी में कई लोकगीत हैं।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

संयत	–	मर्यादित
निरीह	–	बेचारा
विवश	–	मजबूर
सुथरी	–	साफ, निर्मल
ठौड	–	जगह, ठिकाना
सेना	–	पक्षी द्वारा अंडो पर बैठना
गुड़ की पात	–	गुड़ की चाशनी
रेवड़	–	भेड़ों का समूह
एवाळिया	–	सँभालने वाला
खुड़कै	–	चट्टान की कोटर
बाजोटा	–	लकड़ी का छोटा पाट
पँयाळ	–	पाताल
समदाँ	–	समुद्र, सागर
काँठै	–	किनारे

उच्चारण के लिए

समंदर, सुथरी, सत्रह, फड़फड़ाहट, गडरिए, टमरकटूँ, म्हारा, समदाँ, खुड़कै, ऊंदरा, छटपटाते, विनती

सोचें और बताओं

1. खेत के मालिक ने कुरज को पकड़ने के लिए क्या किया ?
2. खेत के मालिक ने गडरिये और ग्वाले की विनती क्यों नहीं मानी ?
3. ऊंदरे ने ऐसा क्या किया कि खेत के मालिक का मुँह उतर गया ?

लिखें

1. कुरज ने गड़रिये से क्या विनती की ?
2. गड़रिये ने खेत के मालिक से क्या निहोरे किए ?
3. ऊंदरे ने कुरज को कैसे छुड़ाया ?
4. खेत के मालिक का मुँह क्यों उतर गया ?
5. किसने किससे, कहा ?

   (क) ''बाँधी कुरज छुडाई म्हारा बीर'' ।

   (ख) ''सोने की माला से काम नहीं सरने वाला'' ।

   (ग) ''सोने के बदले धूल ले'' ।

   (घ) ''सारे का सारा झुंड दे तो छोड़ूँ'' ।
6. नीचे लिखी पंक्तियों को घटना क्रम के अनुसार जमाओ

   (क) समदाँ रे काँठे ब्याई म्हारा बीर टमरकटूँ

   (ख) मेहा में गळ जाई रे म्हारा बीर टमरकटूँ

   (ग) बाँधी कुरज छुड़ाई म्हारा बीर टमरकटूँ

   (घ) आँधी में उड़ जाई म्हारा बीर टमरकटूँ

भाषा की बात

पाठ में आए उन वाक्यों को लिखो, जिनमें ये मुहावरे आए हों।

(क) आँसू छलछला आना – ....

(ख) हृदय फट जाना – ....

(ग) काम नहीं बनना – ....

(घ) खुशी से बावला हो जाना – ....

(ङ) हाथ में न होना – ....

- जब हम किसी वाक्य को पढ़ते बोलते और लिखते हैं तो थोडी देर रुकने के लिए चिह्न का प्रयोग करते हैं। जिन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

प्रश्नवाचक ?

अल्पविराम	,
पूर्णविराम	।
विस्मय बोधक	!
योजक चिह्न	–

तुम भी नीचे लिखे वाक्यों में विराम चिह्न लगाकर फिर से लिखो –

1. पापाजी ये पुस्तकें आप किसे भेज रहे हैं
2. डॉली राकेश जसबीर और राधा के पास भी यह कमीज है
3. ये अलग अलग लेखिकाओं के लिए हैं
4. अरे बाप रे इतना बड़ा साँप

यह भी करें

- ऊंदरे के बिल से सोने की माला, बाजोटा व मुकुट निकाला था। ऊंदरे के बिल में और क्या–क्या होगा ?
- ''ऊंदरा पाताल में अदृश्य हो गया'' ऊंदरे का बिल कितना गहरा होगा ?
- कुरज के बँधे रहने तक उसके बच्चों की देखभाल किसने की होगी ?
- यदि ऊंदरा नहीं आता तो क्या होता ?
- कुरज पर राजस्थान में कई लोकगीत मशहूर हैं। अन्य पक्षियों पर भी लोकगीत गाए जाते हैं। बाल–सभा में कोई एक लोकगीत सुनाएँ।

मेरा संकलन

- तुमने कई पक्षियों के पंख इधर–उधर बिखरे हुए देखे हैं। अलग–अलग तरह के पक्षियों के पंख इकट्ठे करके ''मेरा संकलन में चिपकाओ और बड़ों से पक्षी का नाम पूछकर पंख के नीचे लिखो।

> प्रकृति, समय और धैर्य ये तीन हर दर्द की दवा है।
> –अज्ञात

देखो हँस न देना

चुटकुले

- जंगल में हाथी जा रहा था। उसके पीछे दो चूहे आ रहे थे।
  एक चूहा दूसरे चूहे से बोला–
  इस हाथी से पुराना हिसाब चुकाना है, तू बोले तो मैं इसे लंगड़ी मारकर गिरा दूँ ?
  दूसरा चूहा– छोड़ रहने दे, हम दो हैं और वो अकेला।
  लोग क्या सोचेगे कि दो चूहों ने मिलकर बेचारे एक अकेले हाथी को गिरा दिया।

- टीचर (छात्र से): न्यूटन की गति का तीसरा नियम बताओ।
  छात्रः जी, हर एक क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया होती है।
  टीचरः एक से नहीं उदाहरण सहित बताओ।
  छात्रः जी, मैं जितना आगे पढ़ता जाता हूँ, उतना ही पीछे भूलता भी जाता हूँ।

- संता– डॉक्टर साहब, मुझे एक समस्या है ?
  डॉक्टर– क्या ?
  संता– बात करते वक्त आदमी दिखाई नहीं देता।
  डॉक्टर– ऐसा कब होता है ?
  संता– फोन करते समय–––।